पाठ 11: यतींद्र मिश्र (नौबतखाने में इबादत)

1. लेखक परिचय (Author Introduction)

- **लेखक का नाम:** यतींद्र मिश्र (समकालीन साहित्य और कला-समीक्षक)।
- **प्रमुख रचनाएँ:** यदा-कदा, अयोध्या तथा अन्य कविताएँ, ड्योढ़ी पर आलाप।
- **विशेषता:** इनकी रचनाओं में संगीत और कला के प्रति गहरी समझ और सम्मान दिखाई देता है।

2. पाठ का प्रसंग (Context of the Chapter)

यह पाठ भारत के महान शहनाई वादक और भारत रत्न से सम्मानित **उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ** का व्यक्तिचित्र (Biographical sketch) है। इसमें उनके जीवन, संगीत-साधना, और हिंदू-मुस्लिम एकता (गंगा-जमुनी तहज़ीब) का अत्यंत मार्मिक वर्णन किया गया है।

Schorbit

3. विस्तृत सारांश (Detailed Summary)

बचपन और डुमराँव: बिस्मिल्ला खाँ (बचपन का नाम अमीरुद्दीन) का जन्म डुमराँव (बिहार) में हुआ। शहनाई बजाने के लिए 'नरकट' नाम की घास का प्रयोग होता है, जो डुमराँव में सोन नदी के किनारे पाई जाती है। संगीत सीखने के लिए वे अपनी ननिहाल 'काशी' (बनारस) आ गए।
संगीत साधना और धर्मनिरपेक्षता: वे एक पक्के मुसलमान थे और पाँचों वक़्त की नमाज़ पढ़ते थे। लेकिन इसके साथ ही वे बनारस के बालाजी मंदिर और काशी विश्वनाथ मंदिर में भी पूरी श्रद्धा से शहनाई बजाते थे। यह उनकी सच्ची धर्मनिरपेक्षता और गंगा-जमुनी तहज़ीब का प्रतीक है।
सादगी: अस्सी वर्ष की उम्र में 'भारत रत्न' प्राप्त करने के बाद भी उनमें घमंड नहीं था। वे अल्लाह से हमेशा "सच्चा सुर" ही माँगते थे। एक बार एक शिष्या ने फटी लुंगी पहनने पर टोका, तो उन्होंने कहा, "लुंगिया का क्या है, सिल जाएगी, लेकिन अगर 'सुर' फट गया तो दोबारा नहीं सिलेगा।"
काशी में बदलाव का दुःख: उन्हें इस बात का गहरा दुःख था कि अब काशी में संगीतकारों का पहले जैसा सम्मान नहीं रहा। देसी घी की कचौड़ियों और मलाई बरफ़ जैसी पुरानी चीज़ें गायब हो रही थीं, और लोगों के बीच भाईचारा भी कम हो रहा था।

4. मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण (Character Sketches)

- **बिस्मिल्ला खाँ:** एक महान संगीतकार, धर्मनिरपेक्ष (Secular) इंसान, अत्यंत सादा जीवन जीने वाले, और जीवन भर कला के विद्यार्थी (सीखने वाले) बने रहे। उनके लिए संगीत ही भगवान की इबादत (पूजा) थी।

5. पाठ का मूल भाव / संदेश (Central Theme)

इस पाठ का संदेश यह है कि **संगीत का कोई धर्म नहीं होता**। एक सच्चा कलाकार ईश्वर का भक्त होता है और उसका कला के प्रति पूर्ण समर्पण (Devotion) ही उसकी असली इबादत है। सफलता के शिखर पर पहुँचकर भी व्यक्ति को विनम्र और सादगीपूर्ण रहना चाहिए।

6. महत्त्वपूर्ण बिंदु (Key Points for Exam)

- **सुषिर वाद्यों का शाह:** फूँक कर बजाए जाने वाले वाद्यों में शहनाई को राजा (शाह) माना गया है।
- **मंगलध्वनि का नायक:** आज़ादी के दिन (15 अगस्त 1947) उन्होंने लाल किले से शहनाई बजाई थी। शहनाई शुभ अवसरों पर बजाई जाती है।
- **अमीरुद्दीन और शमसुद्दीन:** बिस्मिल्ला खाँ और उनके बड़े भाई का नाम।

Schorbit